अकाल और उसके बाद

नागार्जुन

चित्रांकनः कैरन हेडॉक

एकलव्य का प्रकाशन

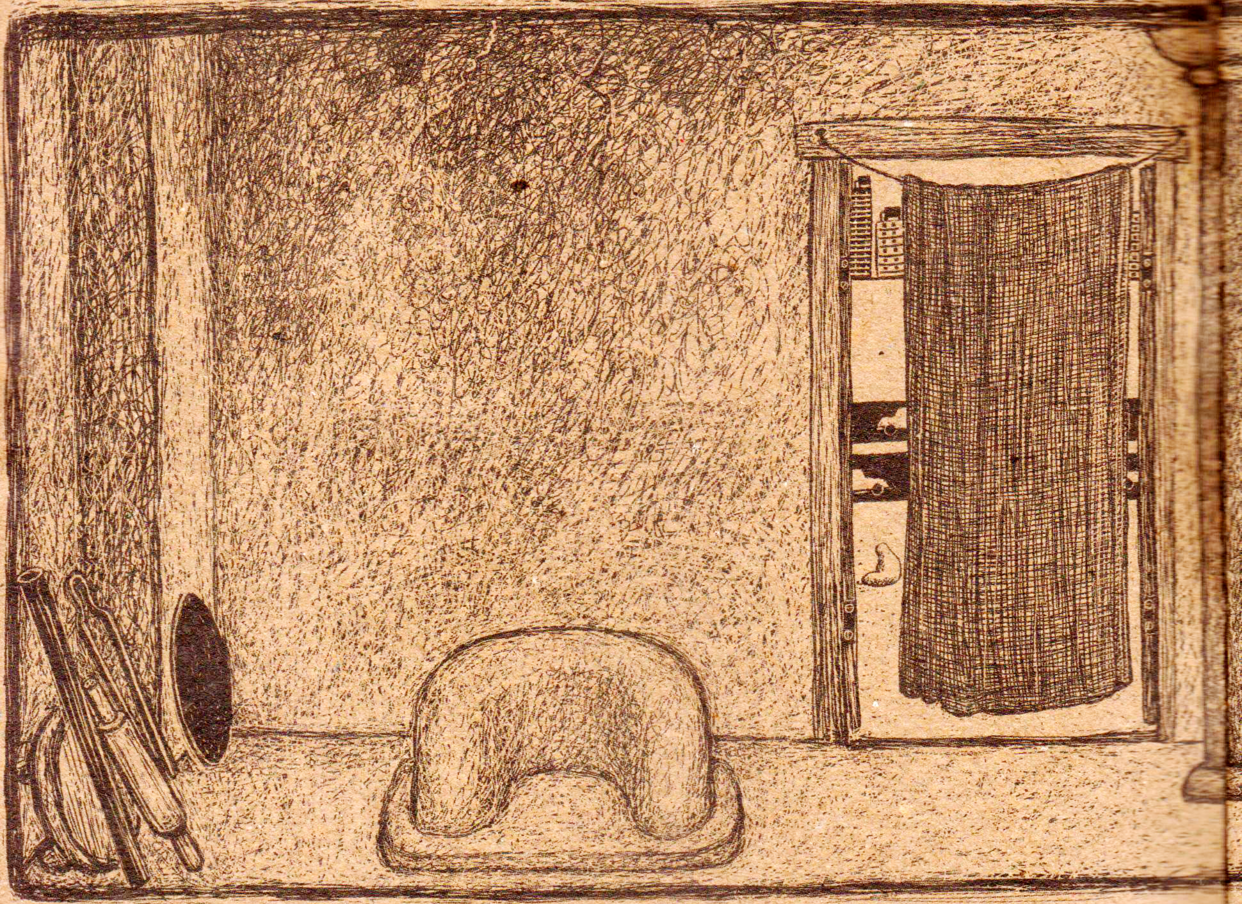

कई दिनों तक चूल्हा रोया,
चक्की रही उदास

For a long long time, the mill was sad and the chulha had to cry

कई दिनों तक

कानी कुतिया सोई उनके पास

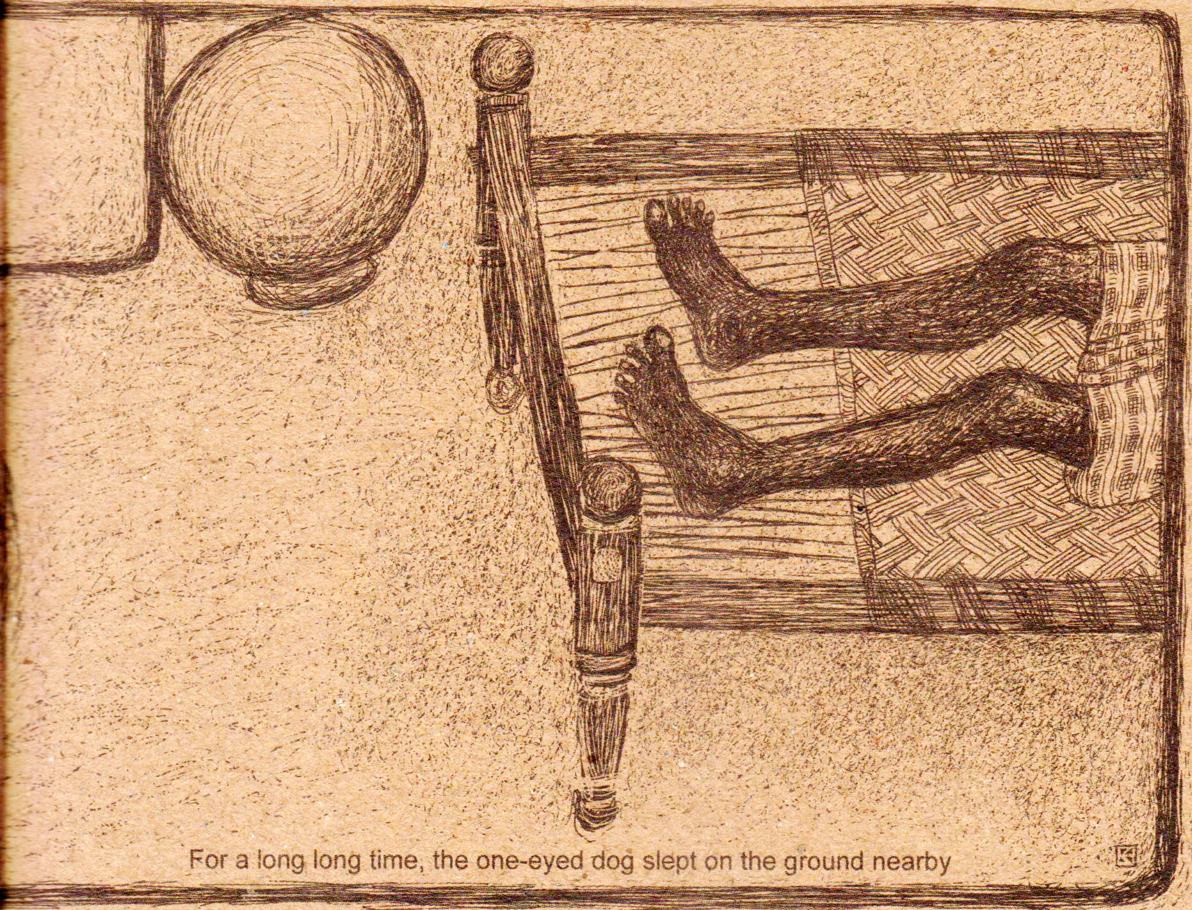

For a long long time, the one-eyed dog slept on the ground nearby

कई दिनों तक

लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

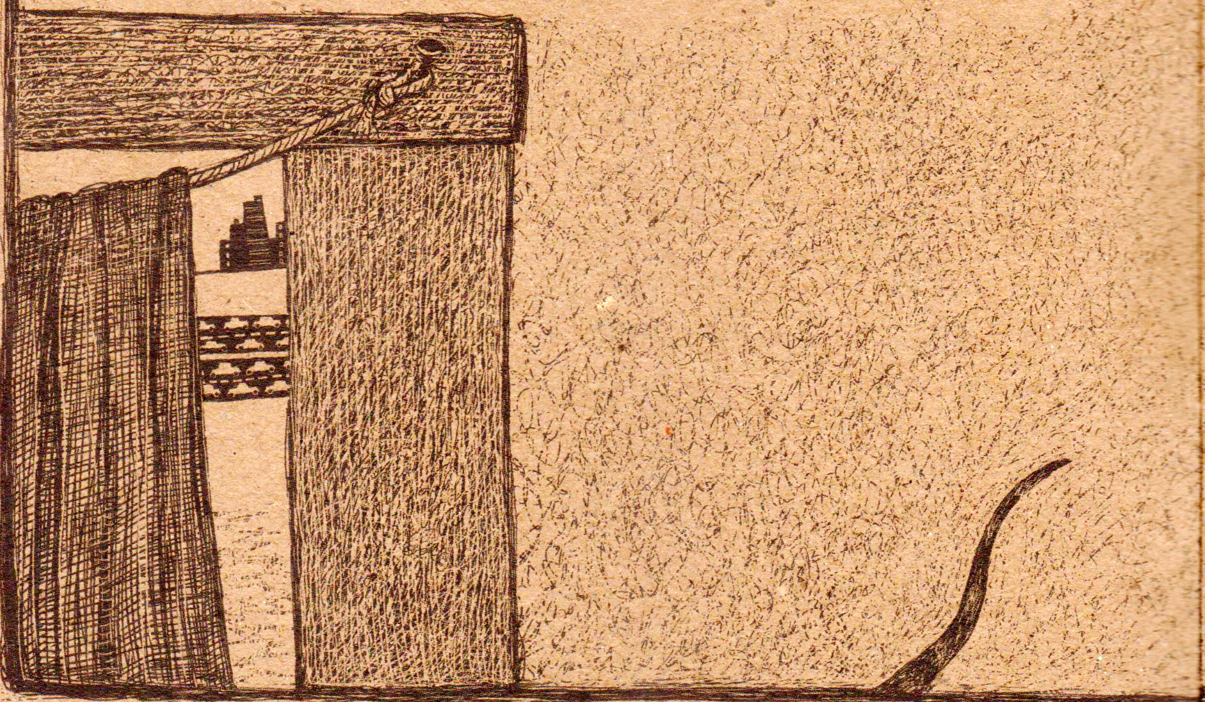

For a long long time, the lizards ran in fear across the wall

कई दिनों तक
चूहों की भी हालत रही शिकस्त।

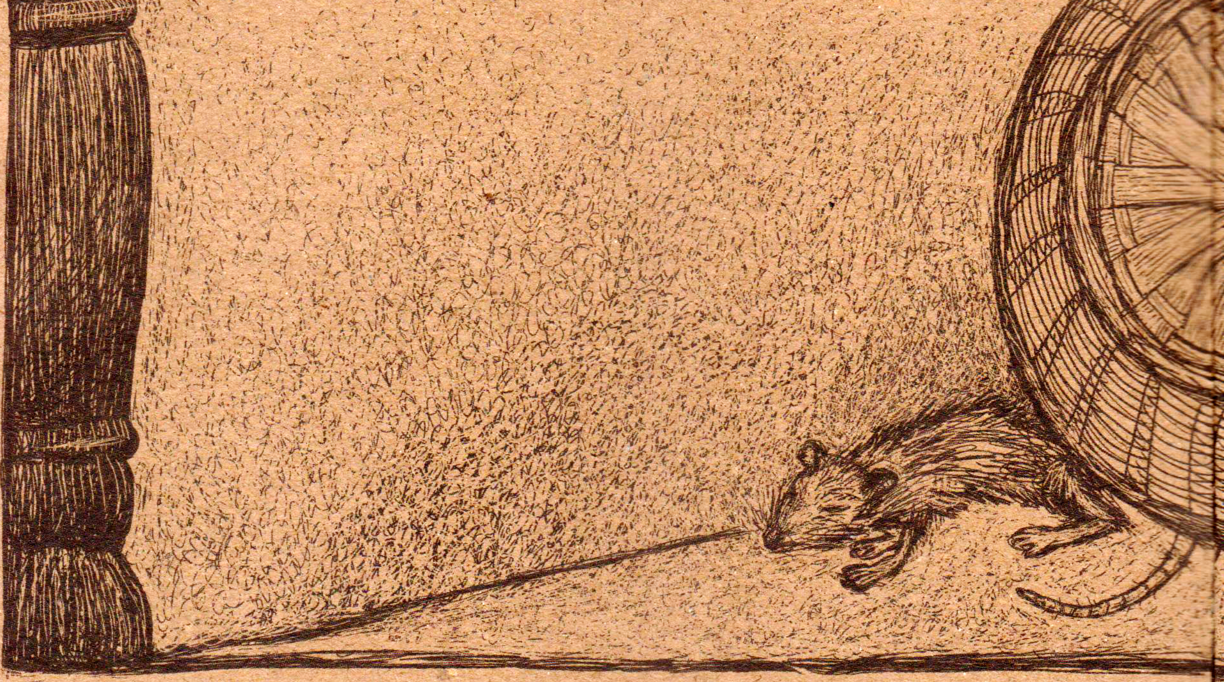

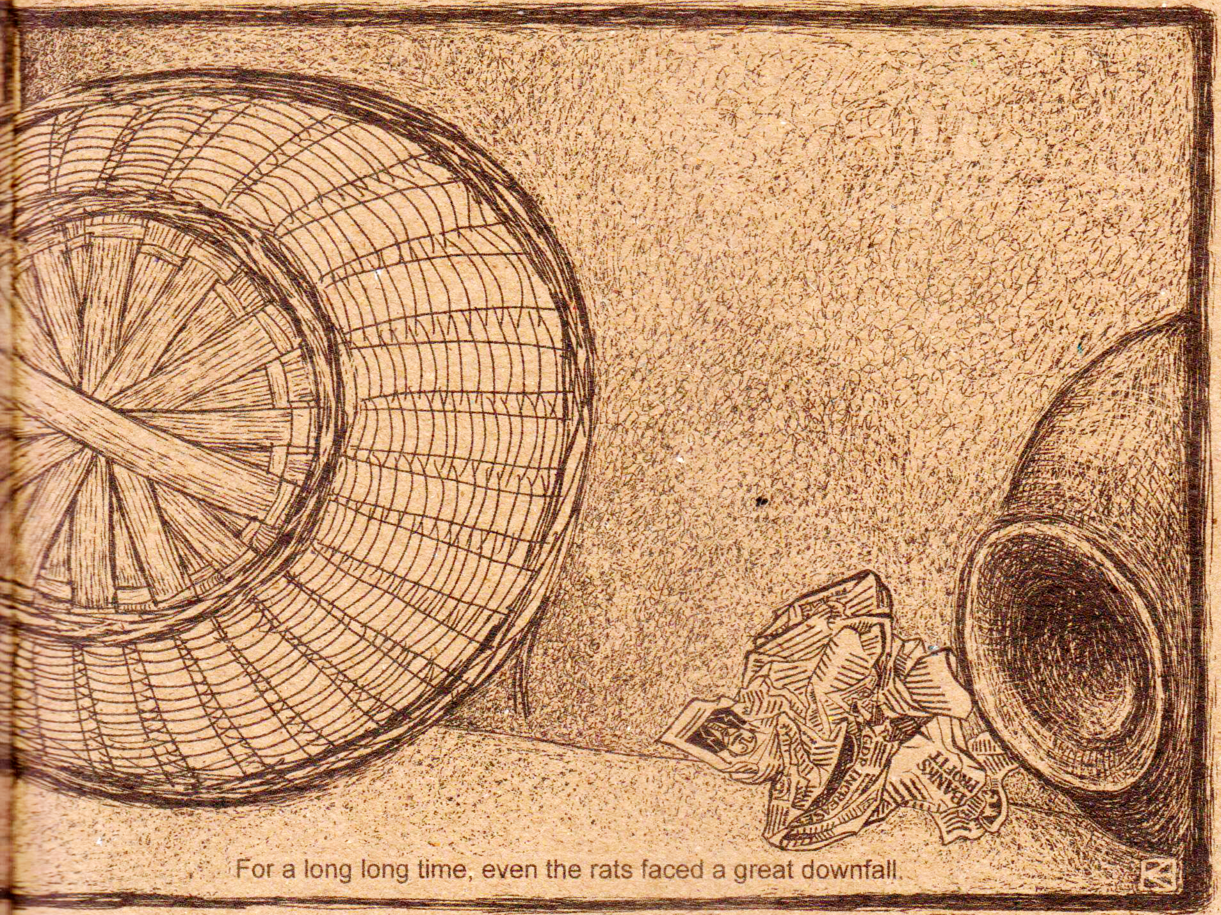

For a long long time, even the rats faced a great downfall.

दाने आए घर के अन्दर
कई दिनों के बाद

Grain came into homes again, after a long long time

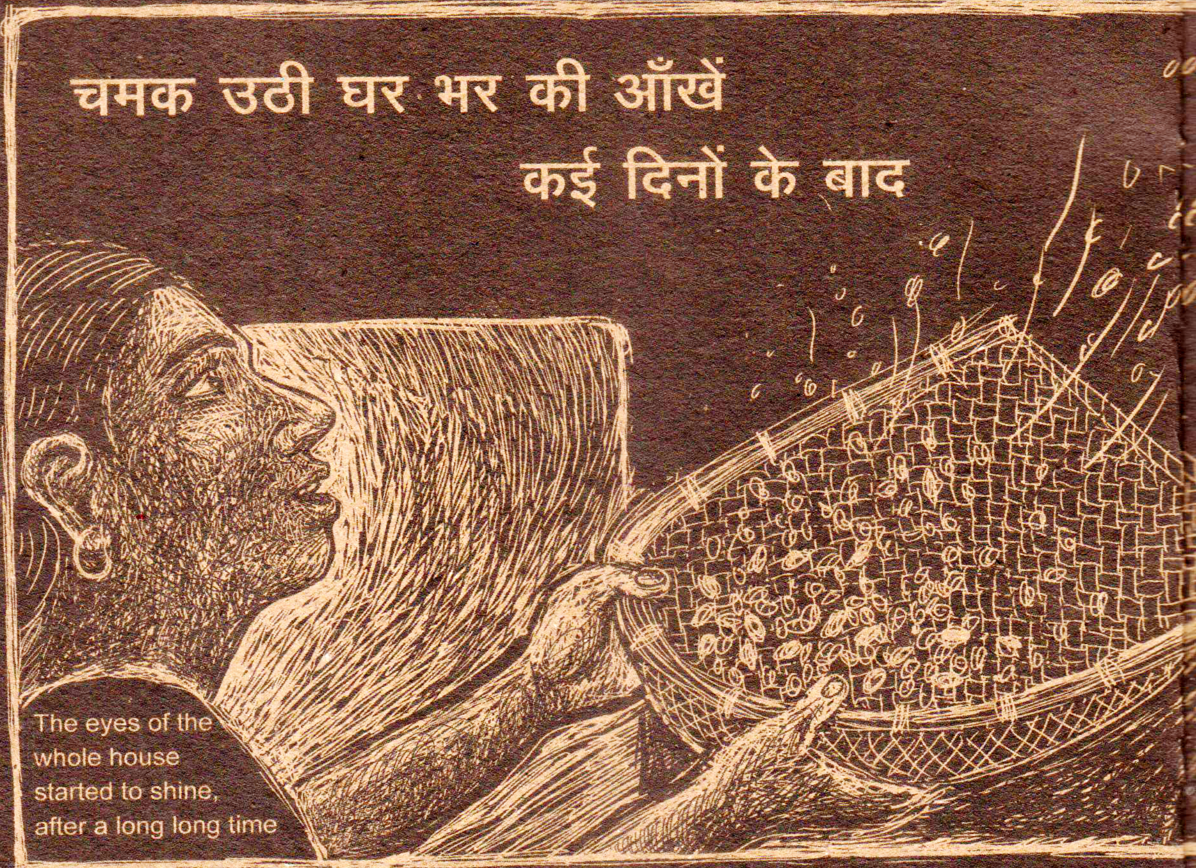
चमक उठी घर भर की आँखें
कई दिनों के बाद
The eyes of the whole house started to shine, after a long long time

धुआँ उठा आँगन से ऊपर
कई दिनों के बाद

Smoke rose up from the courtyard then, after a long long time

कौए ने खुजलाई पाँखें
कई दिनों के बाद।

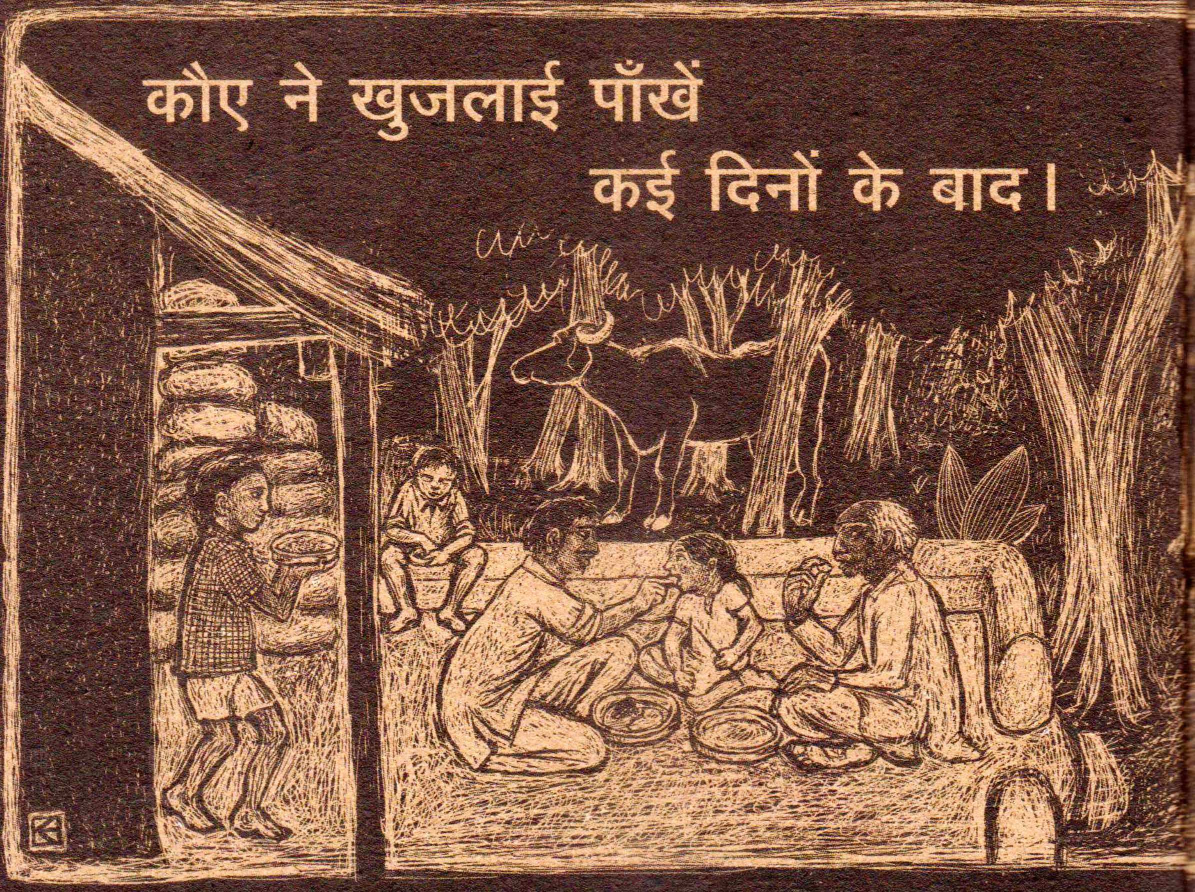

The crow scratched its feathers and felt so fine, after a long long time.

कई दिनों के बाद

कई दिनों के बाद

नागार्जुन (11 जून 1911 - 5 नवम्बर 1998)

मधुबनी, बिहार में जन्मे जनकवि नागार्जुन हिन्दी और मैथिली के वामपन्थी कवि व लेखक के रूप में ख्यात हैं। अपने लेखन, राजनीतिक-सामाजिक काम और घुमक्कड़ी में उनके सरोकार हमेशा वंचित लोगों के पक्ष में रहे हैं। 'अकाल और उसके बाद' उनकी चर्चित कविताओं में से एक है। इसे उत्तर-भारत में आम लोग खूब पसन्द करते हैं।

कैरन हेडॉक
अमरीका में बायोफिज़िक्स में पीएचडी करने के बाद 1985 से भारत में कला, विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक कहानियों की किताबों व पाठ्यपुस्तकों का लेखन और चित्रांकन किया है। आप उनकी वेबसाइट को यहाँ देख सकते हैं
- www.khaydock.com

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

एकलव्य

मूल्यः ₹ 20.00

9789385236280